Panchadashakshariguptinartanalila Stuti

पञ्चदशाक्षरीगुप्तिनर्तनलीलास्तुतिः

Document Information

Text title : Panchadashakshariguptinartanalila Stuti

File name : panchadashAkSharIguptinartanalIlAstutiH.itx

Category : devii, devI, dashamahAvidyA, panchadashI

Location : doc_devii

Author : Kailasanatha Shastri

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Description/comments : panchadashIstavarAjamAlikA compiled by Lalitha Ramani

Latest update : December 27, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 27, 2022

sanskritdocuments.org

पञ्चदशाक्षरीगुप्तिनर्तनलीलास्तुतिः

श्रीगणेशाय नमः ।
ॐ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं श्रीं ।

राजराजेश्वरी राक्षसघ्नि स्फुतराकेन्दु मण्डल राजन्मुखि ।
राज्याधि भारादि सम्पत्प्रदायिनि राजत्किरीटिनि पालय माम् ॥
इन्दुराजत्किरीटिनि पालय माम् ॥ १॥

कल्याणरूप मनोहराङ्गि बहुकल्यंश सम्भव दोषहरे ।
कल्याण शैल धनुर्धर नायिके कल्याणमाशु विधेहि मम ॥
नित्यकल्याणमाशु विधेहि मम ॥ २॥

एणीविशाल दृगम्बुरुहे निजवेणीसितेतर कुण्डलिनी ।
वाणीविलास महावर दायिनी पाणिं प्रदायैवोद्धारय माम् ॥
तव पाणि प्रदायैवोद्धारय माम् ॥ ३॥

ईशान पूर्वक ब्रह्ममयि द्रुतमीप्सिता शेष महार्थप्रदे ।
ईशान वामाङ्क वासमहारसे ईहामिहाशु विमोचय मे ॥
परमीहामिहाशु विमोचय मे ॥ ४॥

लक्ष्मी सरस्वत्यु मादियुते सर्वलक्षण प्रोल्लसि ताङ्गयुते ।
लक्षकोट्यण्ड समूह विधायिनि लक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे ॥
तत्वलक्ष्यार्थवस्तु प्रदर्शय मे ॥ ५॥

ह्रीङ्कार पञ्जरमध्ये शुकेश्वरी ह्रीङ्कार जाप प्रसादकरे ।
ह्रीम्पद लक्ष्यार्थ वस्तुस्वरूपिणि ह्रीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे ॥
महाह्रीरस्तु मेऽनात्म वस्तुसुखे ॥ ६॥

हर्यब्ज जन्म त्रिदृग्जननी क्षित्री हर्यश्व पूर्वा मरार्चिताङ्घ्रे ।
हर्षिणि श्रीहरि सोदरि शाम्भवि हर्षप्रदा भव मे सततम् ॥
महाहर्षप्रदा भव मे सततम् ॥ ७॥

सर्व चराचर जन्तुद्भव स्थिति संहार कर्तुस्सहायभूते ।
संसार चक्र परिभ्रमणादिषु साहाय्यमाशु विधेहि मम ॥
नित्यसाहाय्यमाशु विधेहि मम ॥ ८॥

कल्प लतोपम बाहुयुगे महाकल्पान्त कालैक साक्षिभूते ।
कल्पित मिथ्या प्रपञ्च विलासिनि कल्पय मे गति मात्मम यीम् ॥
परिकल्पय मे गति मात्मम यीम् ॥ ९॥

हव्यवहादि कलामयि सज्जनहर्म्य महान्दोलि कादिप्रदे ।
हस्ति कुम्भोन्नत वक्षोज शोभिते हत्यादि पाप मिहोच्चाटय ॥
ब्रह्महत्यादि पाप मिहोच्चाटय ॥ १०॥

लब्धमहा भक्ति योगैक साधने लक्ष्य षडध्वाति क्रान्तरूपे ।
लक्ष्मण पूर्वज मुख्यप्रपूजिते लक्ष्मीकुरुष्व माँ त्वं कृपया ॥
महालक्ष्मीकुरुष्व माँ त्वं कृपया ॥ ११॥

ह्रीङ्कार रङ्गस्थलान्तर्महानटि ह्रीङ्कारोद्यानक केकिनीशे ।
ह्रींसरसी कलहंसिनि शङ्करि ह्रीम्पद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु ॥
तव ह्रीम्पद लक्ष्यार्थमाविष्कुरु ॥ १२॥

सर्गस्थिति प्रलयादि विनिर्मुक्त सच्चिदानन्दैक ब्रह्ममयि ।
सत्सम्प्रदायात्म विद्यास्वरूपिणि सद्वस्तुद्योतय मे सततम् ॥
हृदि सद्वस्तुद्योतय मे सततम् ॥ १३॥

कर्तृत्व भोक्तृत्व धर्मादि दुरगकूटस्थ चैतन्य साक्षिभूते ।
कल्पित वस्त्वधिष्ठानस्वरूपिणि कर्मादिबन्धद्विमोचय माम् ॥
कामकर्मादिबन्धद्विमोचय माम् ॥ १४॥

लम्बोदरप्रसवित्रि षडाननलब्धपयः पान वक्षोरुहे ।
लज्जान्विते शिवशय्यागृहाङ्गणे लक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम् ॥
ध्यानलक्ष्यं ममास्तु ते पादयुगम् ॥ १५॥

ह्रीङ्कार कल्पमहाद्रुम मञ्जरि ह्रीङ्कार दुग्ध पयोधि सुधे ।
ह्रीङ्कार गेहमहारत्न दीपिके ह्रीङ्कार जापेऽस्तु मे रसना ॥
तव ह्रीङ्कार जापेऽस्तु मे रसना ॥ १६॥

पूर्णविद्येश्वरी श्रीमन्महागुरुपूर्णमहाकरुणासुधया ।
पूर्णाद्य गुप्तिः श्री पञ्चदशाक्षरी पूर्णप्रसादं करोतु मम ॥

अतुलपूर्णप्रसादं करोतु मम ॥ १७॥

पञ्च मुखेशादि देवप्रतोषकपञ्चदशाक्षर गुप्तिमिमम् ।
पञ्चाक्षरादि वदुच्चरतामिह पञ्चत्व सम्भवभीतिर्नहि ॥
क्वापि पञ्चत्व सम्भवभीतिर्नहि ॥ १८॥

गुप्तिनर्तनलीलेयं राजताळसमन्विता ।
देवतोत्सववेलायां कारयामास सूरिभिः ॥ १९॥

अन्योऽन्यं पादतलेनाघटनं प्रदक्षिणनर्तनं गुप्तिः ।
कुम्मिः इति द्राविडभाषायाम् ।

इति श्री पदवाक्यादिपारदृश्वनो ब्रह्मीभूतकैलासनाथशास्त्रिणः
कृतिषु पञ्चदशाक्षरीगुप्तीस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

Proofread by Rajesh Thyagarajan

Panchadashakshariguptinartanalila Stuti
pdf was typeset on December 27, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*